Sreeparvathiyude Paadam

story in Malayalam

by E. Harikumar

Translated into Hindi by

Sri V.D. Krishnan Nambiar

श्री पार्वंती के चरण

□ हरि कुमार

पावस की बरसात की एक रात, मिट्टी की गन्ध फलाती नयी वर्षा आयी, तो माधवी ने अपने परिवार के वृक्षों को याद किया। घर की ऊपर वाली खिड़की से मूसलधार वर्षा के बरसने, हवा में वृक्षों की टहनियों के हिलने-डुलने और नारियल के पेड़ों की फुनगियों के नाचने के दृश्य दिखाई पड़ते। रात को लेटते हुए वर्षा की बूंदों के खपरैल पर आ टपकने और पेड़ों के बीच से हवा के टकराने की आवाज। फिर मेंढकों और मिट्टी के कीड़ों के मिलकर रोने का स्वर। ये सब आवाजें मिलकर ताल-मेल बिठातीं। इन सबके ऊपर समुद्र का गर्जन। इधर एर्णाकुलम् में ऐसा कुछ नहीं। समुन्दर के बहुत निकट होने के बावजूद वह गर्जन नहीं। सिर्फ एक सिसक। किसी राशन के दुकानदार के चेहरे की तरह वर्षा गम्भीर और औपचारिक है। पेड़ों के मर्मर···पेड़ ? कहाँ हैं पेड़ ?···

रवि पीठ करके लेटा है। सोया नहीं था। उसने धीरे से पूछा।

"देखो, तुम सो गये क्या ?"

"नहीं।" वह एकदम चौंका। "क्या चाहिए ?"

वह झपकी ले रहा था।

"कुछ नहीं, क्या मैं इस शनिवार को कोट्टप्पटि जाऊँ ?"

रवि उठकर पलँग के सिरहाने तकिया लगा के अधलेटा रहा।

"क्या कहा ?"

"मैं कोट्टप्पटि जाऊँ, इस शनिवार को ?"

रात को सोने के लिए लेटते वक्त रवि माधवी की बात सुनता नहीं। सुनता भी है तो सिर्फ हाँ कर देता है। पर कोट्टप्पटि जाने की

बात को ऐसा टाला नहीं जा सकता। उसकी आत्मा की पुकार है वह। उसकी तीर्थ-यात्रा। कभी उसे सुस्त देखता था उसके हाथों से बर्तन के गिरकर टूट जाने की आवाज सुनता तो वह कहता।

"माधवी, तेरी तीर्थ-यात्रा का समय हो गया है।"

इस बार ऐसा कुछ नहीं हुआ। काँच का कोई गिलास भी टूटा नहीं। शायद अचानक हुई वर्षा के कारण हो। बाहर बिजली की चमक, फिर गरजकर गिरना। वर्षा फिर जोर पकड़ती। गर्मी को दूर करती हुई खिड़की से ठण्डी हवा बही। अब ओढ़नी ओढ़े सिकुड़-सिमटकर सो जाने का कैसा मजा होगा।

"तेरी यह ज्यादती हो गयी।"

"क्या ?"

"मुझे उठा जो दिया ?"

"सॉरी। उसने कहा। लेट जाओ।"

उसकी बोली में दुःख था। वह जानती है कि वर्षा की घरघराहट और हवा मिलकर, हमें उस लोरी की तरह सोने का निमन्त्रण देती है, जो घरेलू पंखे को झुलाती माँ गाती हो।

झपकी में निमग्न किसी व्यक्ति को जगाना ज्यादती ही है।

वह लेटा। माधवी को हाथों में बाँधा। कपोलों को चूमा।

"तू जा, इसी शनिवार को।"

"तुम्हें तकलीफ नहीं होगी ?"

"कोई तकलीफ नहीं। सबेरे तंकम् चाय-नाश्ता बनायेगी। फिर खाना बनाके चली जायेगी। दूसरे काम मैं और बच्चे मिलकर करेंगे। उसमें कोई तकलीफ नहीं होगी।"

दूसरे दिन भी दुपहर तक पानी बरसा।

बस से उतरकर पगडण्डी की ओर मुड़ी तो गीली मिट्टी ने माधवी की अगवानी की। चार रोज पहले बरसे पानी का गीलापन अभी गया नहीं था। उसने चप्पल हाथ में उठायी। पैरों के नीचे से ठण्ड उसके अन्दर फैल गयी। बाँस-वन के परे काजू के पेड़ के फूलने की खुशबू फैली थी। वह खुशबू उसकी परिचित थी। जब छोटी बच्ची थी, तब से। बीस साल बाद भी इस पगडण्डी की खुशबू नष्ट नहीं हो गयी है। अब वर्षा के बढ़ने से इस पगडण्डी में सड़े पत्तों और मौलसिरि के फूलों की खुशबू होगी।

फाटक से होकर माधवी आँगन में पहुँची।

शारदा दीदी दहलीज पर खड़ी थीं। वे आँगन की तरफ आ गयीं।

"देखो रामजी, यह कौन आ गयी है ?"

रामजी बाहर आये। कन्धे पर तौलिया और धोती पहना था।

"कौन, माधवी ? क्यों री ! रवि ने तुझे घर से निकाल दिया ?"

"माधवी को इतनी जल्दी रवि बाहर नहीं निकालेंगे।" शारदा दीदी ने कहा।

आँगन के तुलसी के बड़े चबूतरे पर जुही फूली हुई थी। माधवी दहलीज पर चढ़े बिना चबूतरे के पास जुही की खुशबू का आनन्द लेने लगी।

"यह पुरानी जुही अब भी खिलती है न ?"

"हाँ, अब वर्षा शुरू हुई तो उस पर बहुत-से फूल लगेंगे।"

जब यह बच्ची रही, तब भी चबूतरे पर जुही थी।

आँगन के किनारे खिले हुए पगोड़े के पौधे स्वयंवर के लिए सजे राजकुमारों की तरह खड़े थे। मल्लिका के नीचे सुबह सारे-के-सारे फूल गिरे हुए होंगे। सफाई के बाद अब चार-पाँच फूल ही रह गये हैं।

"तू इधर आ बैठ।" शारदा दीदी ने कहा।

"वह कैसी खड़ी है ?" रामजी बोले। "एक हाथ में चप्पल और दूसरे में थैला। लगता है कि वह आँगन में ही बसने आयी है। जब तक वह यहाँ रहेगी, हम इधर आँगन में एक रोड बनायेंगे।"

माधवी मुसकुरायी, "इधर इस जुही के पास ठीक होगा।"

रसोई घर के खपरैल पर धुआँ की हलकी परतें। नाश्ता बनाने की खुशबू माधवी को महसूस हुई। चावल का सत्तू गरम करके नारियल के साथ भाप में उबालने की खुशबू। उसने नाक फैला दी।

"चावल का नाश्ता !" माधवी बोली।

चप्पल नीचे रखकर थैला लिये वह जल्दी दहलीज चढ़ी। दालान से रसोई की तरफ चली। पीछे से एक जत्था उसके साथ हो लिया। रामजी, शारदा दीदी, सुप्रिया, जो मौसी के आने की खबर सुनकर ऊपर से नीचे चली आयी थी, और नौकरानी पारुक्कुट्टि। काले और गोरे रंग की दो बिल्लियाँ। वे माधवी के पैरों को सहलाने लगीं।

जत्था रसोई के सामने के बरामदे में खाने की मेज पर समाप्त हुआ।

सब कुछ एकदम स्वाभाविक है। हवा में हरी घास की खुशबू गोशाला से गाय का रम्भाना, चौके से लकड़ी के जलने की गन्ध, फिर सूरज की रोशनी का उदय। उन्तीस साल की उम्र में शादी होने तक ये सब उसकी अपनी थीं। पिछले पन्द्रह सालों से उसे खो गयी थीं। कम-से-कम कुछ दिनों के लिए उसे फिर से जीने और अनुभव करने के लिए वह आ जाती। छः महीने में या साल में एक बार।

रामजी और शारदा दीदी मेज की दूसरी तरफ बैठे नाश्ता खाते, मजे से देख रहे थे। उसकी बायीं ओर कुर्सी पर सुप्रिया बैठी थी।

"लगता है कि रवि इस लड़की को खाने को कुछ नहीं देता।" रामजी ने

कहा, "इसकी सूरत तो देखो।"

"अबकी बार उसका मजाक नहीं उड़ाना।" शारदा दीदी बोली। "उसे आराम से खाने दिया जाय।"

"क्या मैंने कुछ गलत कहा। देखो, उसकी खाने की आसक्ति ! कितना ज्यादा खाया गया।"

"खाने दे। रामजी को क्या हर्ज है ?"

माधवी ने चेहरा फुलाया।

"बेटी, गरम पकवान अभी चौके से उतारा है।" पारुक्कुट्टि ने बताया, "ले आऊँ ?"

माधवी ने क्षण-भर सोचा। फिर बोली, "नहीं। एक टुकड़ा ज्यादा खाया तो लोग इधर क्या-क्या कहते हैं।"

"हाय, मैं तो जा रहा हूँ।" रामजी ने तौलिया कन्धे पर डालकर कहा, "मुझे खेत में काम है।"

"जाइये। वहीं अच्छा होगा। दूसरों को गुस्सैल न बनायें। है न बेटी ?"

उसने सुप्रिया को देखकर कहा था। उसका चेहरा आकर्षक था। कुहनियों पर चेहरा थामे वह मौसी को एकटक देखती जा रही थी। बाबूजी को मौसी का मजाक उड़ाते उसे अच्छा नहीं लगा था। उसे थोड़ी-सी तकलीफ हुई। इसलिए जब मौसी ने पूछा 'है न बेटी' तो उसने जल्दी सिर हिला दिया।

माधवी ने थैले से एक कागज की पेटी उठाकर उसे दिखायी।

"बताओ, यह क्या है ?"

"मुझे मालूम है।"

उसने कागज की पेटी खोलकर उसके अन्दर से गुड़िया को बाहर निकाला। उसका चेहरा खिल उठा। उसने गुड़िया को मेज पर लिटाकर देखा। "हाँ, आँखें मूँद लेती है।"

"यह तो वैसे ही चार बच्चों के साथ प्रारब्ध का जीवन जी रही है। अब एक बच्ची को और लेकर क्या करेगी, भगवान ही जानें।" रामजी ने बताया।

सुप्रिया भागे-भागे चार गुड़िया सहित लौट आयी। पाँचों को उसने मेज पर बिठा दिया। भरे गालों वाली सभी गुड़ियाँ उसकी बेटियाँ-जैसी ही लगीं।

"सुप्रिया, हम गुंजा इकट्ठा करने चलेंगे।"

सुप्रिया ने हामी भरी। सिर हिलाया।

"माधवी, तुझे मछली चाहिए ? मछली वाली औरत ले आयी है।" शारदा दीदी ने पूछा।

"जी हाँ, मछली तला दे।"

"इस लड़की को तली हुई मछली ही पसन्द है।" पारुक्कुट्टि हँस दी।

"मौसी, आओ।" सुप्रिया अपनी नयी सहेली को गोद में लेकर दहलीज पर खड़ी थी।

"अभी आयी।"

सुप्रिया आगे और माधवी पीछे-पीछे अहाते से चलीं। चलते वक्त घास पर से पतंगा उड़ गया।

उस दिन एक पतंगा घर के अन्दर आयी। सुप्रिया बतियाने लगी। माँ ने कहा, "पतंगा आया तो हमें बहुत ज्यादा पैसा मिल जायेगा।"

"यह बात !"

"हाँ ! पर हमारे बाँध रखने से कुछ नहीं होगा। उसे अपने-आप आना चाहिए।"

"अच्छा !"

"हाँ।"

सुप्रिया सिर हिलाती हुई चली। उसके कन्धे तक कढ़ा गया, मुलायम बाल हिलने लगा।

"हमें बहुत ज्यादा पैसे की क्या जरूरत है ?"

"बहुत ज्यादा ?"

"हाँ।"

"हम कुछ और गुड़ियों को क्यों न खरीदें ?"

भोली बच्ची। उसके लिए जरूरी खिलौने रामजी खरीद नहीं देते। उसकी सभी गुड़ियाँ, समय-समय पर, उसी की खरीद दी गयी हैं। किस सावधानी से उन्हें सम्भाल के रखा है ! हर खिलौना देते समय रामजी और शारदा दीदी कहते, "तू उसे दुलार करके हठी बना देती है।"

गुंजे के पेड़ के नीचे बहुत-से लाल गुंजे के दावे। उसे इकट्ठा करने बैठी तो सुप्रिया बोली।

"मौसी, हम एक बात भूल गयीं।"

"क्या है, बेटी ?"

"एक बर्तन ले सकती थीं। मैंने नहीं सोचा था कि इतना ज्यादा होगा।"

"कोई बात नहीं। हम केले के पत्ते में समेट लेंगी।"

अहाते में बहुत-से पेड़ थे। आम, कटहल, इमली, मौलसिरि, टीकवुड··· माधवी को नानी याद आयी। सुप्रिया की उम्र में रोज सुबह वह नानी के साथ अहाते में चलती-फिरती थी। पेड़ों के बीच हर पेड़ और हर पौधे की जाँच-पड़ताल करती। बाग की हर कली और कोंपल को देखती। ढाई एकड़ जमीन की हर चीज नानी को कण्ठस्थ जो थी।

एक बार सुबह की यात्रा के बाद जब घर लौटी तो क्या देखती है कि घाटी

और कुल्हाड़ी लिये दो जन आँगन में खड़े हैं। अहाते में नारियल के पेड़ों के बीच जो फालतू पेड़ खड़े थे, उन्हें काटने का बाबूजी ने प्रबन्ध कर रखा था। बात जान लेने पर नानी ने कहा :

"इस अहाते से कोई एक भी पेड़ न कटेगा। पेड़ लगा देना काफी है, काटने की जरूरत नहीं।"

"पर माँ, इन फालतू पेड़ों को काट दें तो नारियल की उपज दुगुनी हो जायेगी।" बाबूजी ने नानी को समझाने की कोशिश की।

"नहीं, नहीं। अब जो मिलते, वही नारियल काफी हैं।"

नानी का गुस्सा देखकर बाबूजी को हँसी आयी। उन्होंने जोर से हँसते हुए कहा, "ठीक है माँ, काटूंगा नहीं।"

मजदूरों को जाने दिया तो उन्हें वापस बुलाकर आधे दिन की मजदूरी देने को नानी ने कहा।

"अगर मैं मर जाऊँ, तो मुझे जलाने के लिए आम का पेड़ न काटो। बाहर से लकड़ी खरीदोगे।" नानी ने कह रखा था।

"क्या सोच रही हैं, मौसी ?"

माधवी लौट आयी।

"मैं अपनी नानी को याद कर रही थी, तूने देखा नहीं। बाहर फोटो रखा है न, वो नानी। उस नानी की पोतियाँ हैं तेरी माँ और मैं। नानी से लेकर सबके लड़कियाँ ही हुई हैं। नानी की दो बेटियाँ। उनकी भी एक-एक बेटी। तेरी माँ और मैं। मैंने ही यह क्रम बदला है। दो जंगली बिल्ले। पर मुझे लड़कियाँ ही पसन्द हैं।"

"मौसी को मैं पसन्द हूँ।"

माधवी ने सुप्रिया को देखा। वह यों खड़ी रही मानो उसका भविष्य मेरे उत्तर पर निर्भर है। आँखों में कुतूहलता।

"पसन्द है।" माधवी ने उसके कपोलों को चूमा, "बहुत पसन्द।"

सुप्रिया का चेहरा खिला।

गुंजा इकट्ठा करने के बाद वे फिर चलीं।

"तूने श्री पार्वती का चरण देखा है ?"

"नहीं।"

उसने माधवी को इस तरह देखा मानो वह क्या चीज है।

सफेद फूलदार पौधा फूला हुआ था, जो समय के पहले आयी वर्षा में उग आया था। उसमें से एक फूल तोड़कर उसने अपनी बायीं हथेली में उल्टा रखा। सुप्रिया को दिखाया।

"यह कैसा है ?"

"एक पैर जैसा है।"

"हाँ, यही है श्री पार्वती का चरण। मुझे नानी ने दिखाया था। उसके बाद जब मैं ओणम् के समय फूलों को सजाती, तब सफेद फूल को इस प्रकार पलट रखती। तब ओणम के दिन श्री पार्वती हमारे घर आयेंगी।"

सुप्रिया की आँखें खिलीं।

"इस बार ओणम को मैं भी ऐसा करूँगी। वापस घर पहुँचने पर सुप्रिया ने सारे गुंजे मिट्टी के एक छोटे बर्तन में रखे थे।

"यह छोटा-सा बर्तन आर्द्रा के दिन माँ ने खरीदा था।"

उस बर्तन का तीन-चौथाई भाग लाल गुंजों के दानों से भरा था। उसने एक और छोटा बर्तन माधवी को दिखाया। उसमें घुंघची के दाने भरे थे।

छोटे बर्तनों में गुंजे और घुंघचियाँ। लिटाने पर आँखें मूँदने वाली गुड़ियाँ। सुप्रिया की दुनिया बहुत सुन्दर थी। एक क्षण के लिए माधवी को उससे ईर्ष्या हुई।

शाम को मूसलाधार वर्षा हुई। बूँदें ऐसी गिरीं जैसे खपरैल पर कंकड़ फेंकते हो। हवा में पेड़ों की टहनियाँ हिलीं। सुपारी के पेड़ झूले। ऊपर के कमरे में खिड़की के पास नीले फर्रा पर सुप्रिया को गले लगाये बैठी वर्षा को देख रही थी माधवी। उसे अपने बचपन के दिन याद आये। वार्निश की खुशबूदार कमरे। रोसवुड के सुगठित पायों वाले पलँग। मेजें। ढेर-सारे चित्रों और मूर्तियों वाला पूजा-भवन। उसके आगे छत। लकड़ी की बड़ी पेटी में चावल। खुशबू के लिए वह कभी-कभी पेटी खोलकर उसमें मुख डाला करती। अब सुप्रिया भी ऐसा सब कुछ करती होगी।

"मौसी और बेटी इधर कर क्या रही हैं ? मैं नीचे तुम्हें खोज रही थी।" शारदा दीदी ने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कहा।

"कुछ नहीं माँ, हम वर्षा को देख रही हैं।"

शारदा दीदी खिड़की के पास आ खड़ी हुई। वह बाहर ऐसा देख रही थी मानो वर्षा को पहली बार देख रही हो।

"लगता है कि इस बार वर्षा पहले से शुरू हो गयी है।" उसकी आवाज में आने वाले गीले दिनों की बुरी सूचना थी। भीगी साँझें, अनसूखे कपड़ों की सीलन भरे कमरे, कर्किटक महीने की गरीबी।

माधवी कर्किटक मास की सन्ध्याओं की याद करने लगी। संक्रान्ति के दिन पारुक्कुट्टि पुराने सूप में राख से सना चावल का लोंदा, टूटा घड़ा आदि लेकर घर के अन्दर-बाहर जमा करती। 'ज्येष्ठा चली जा और लक्ष्मी अन्दर आ' और दीप जलाके दौड़ा करती। वह और शारदा दीदी जब बच्चियाँ थीं, तब पारुक्कुट्टि के पीछे हो लेती थीं। फिर वर्षा की गीली साँझों में पूजा के कमरे में थाली में रखने

के लिए दस-पुष्पों की तलाश में जातीं। माधवी को संक्रान्ति के बाद की साँझें प्यारी थीं। ऐसी खामोश सन्ध्या, जब पेड़ों के पत्ते तक न हिलते थे। काले बादलों के बावजूद प्राप्त होने वाली रोशनी। दूर मन्दिर से साज-बाजों की आवाज। इन सबकी निर्मलता का असर उसके जीवन पर पड़ा था।

"दीदी, पारुक्कुट्टि अब भी ज्येष्ठा को दूर भगाती नहीं क्या ?"

"संक्रान्ति के दिन न ? उसके लिए अभी कितने दिन हैं।"

फिर पता नहीं कुछ सोचकर उन्होंने कहा, "बेटी का स्कूल कब खुलेगा ?"

"छः तारीख को।"

"इधर तो पहली तारीख को ही खुलता है। अब एक हफ्ता नहीं। बेटी, सन्ध्या हो गयी। जाकर दीया जलाओ।"

"माँ, समय नहीं हो गया। वर्षा से धुँधला हो गया है। मैं मौसी के पास मजे से बैठी हूँ।" वह मौसी से और सटकर बैठी।

"मौसी की बेटी है, है न ?" माधवी ने उसे पास खींचकर प्यार किया।

"ओह ! ज्यादा बोलो मत।"

बाहर वर्षा जोर पकड़ी हुई थी। तीनों कुछ बोले बिना बाहर को देख रही थीं। माधवी को लगा—एर्णाकुलम् में वर्षा कैसी बेजान है ? किसी कंजूस के दान की तरह। यह ज्यादती वहाँ कभी नहीं होगी।

"बेटी, जाकर दीया जलाओ।" शारदा दीदी ने फिर से कहा।

सुप्रिया उठकर सीढ़ियाँ चढ़ गयी।

शारदा दीदी ने खिड़की पर सिर लगाये बाहर देखा। कुछ देर के लिए दोनों बहिनें कुछ नहीं बोलीं। फिर शारदा दीदी ने पूछा :

"तू रवि और बच्चों को वहीं छोड़कर इधर क्यों आयी ?"

क्यों आयी ? वह खुद नहीं जानती।

"ऐसे वर्षा के दिनों में इस खिड़की के पास बैठी हम कंकड़-पत्थर के खेल खेलती थीं। दीदी, तुम्हें याद है ?"

"मुझे मालूम है, तू क्यों आयी है।" शारदा दीदी ने कहा।

"दीदी को याद है ? फिर जब दीया जलाने का समय होता तो ताई हमें ढूँढ़कर आतीं और हम कंकड़ छिपा रखतीं।"

शारदा दीदी उस पर ध्यान नहीं दे रही थीं। ध्यान देतीं तो भी उन्हें याद नहीं रहता। वह माधवी की तरह नहीं। उन्हें मात्र वर्तमान की परेशानियाँ और भविष्य की आशंकायें होतीं। और माधवी को उसे देखने में मजा आता। शारदा दीदी को शारदा दीदी ही होकर देखना वह चाहती है।

"तेरी माँ को त्रिशूर में घर बनाने के लिए पश्चिम के खेतों को बेचकर पैसा बनाया था। तब नानी ने खास बताया था, यह घर और जमीन मार्गवि के लिए

है। नानी ने तो कुछ लिया नहीं था, और वे चल बसीं। फिर माँ भी जल्दी चली गयीं। अड़तालीस साल की उम्र में माँ गयी थीं। फिर बाबूजी भी जल्दी चल बसे। मैं अकेली हो गयी। परम्परा के अनुसार, पता नहीं, मैं कब चली जाऊँगी। न जाने मेरी बच्ची का क्या होगा ?"

"दीदी ऐसे-वैसे पर नहीं जायेंगी।" माधवी ने कहा, "दीदी नानी की तरह लम्बी उम्र जियेंगी।"

"दीपम्···दीपम्···"

नीचे से सुप्रिया की आवाज सुनी। सीढ़ियों पर रोशनी का धुआँ उठा। दीये के प्रकाश में सुप्रिया का सुन्दर चेहरा।

"मौसी, दीपम्···"

वह मौसी को दीया दिखाने सीढ़ी चढ़ आयी थी। माधवी को तब अपने जीवन की धन्यता महसूस हुई जब उसने वह खिला, भोला-भाला मुख देखा।

उसने उठकर हाथ जोड़े।

"बेटी, मैंने देखा।" फिर मन में कहा, 'दीर्घायु हो बेटी !'

"लगा कि आज रात को भी बिजली नहीं होगी।" शारदा दीदी ने जोर से कहा, "बेटी, यह लालटेन और लैम्प जलाओ।"

तभी माधवी को ध्यान हुआ कि बाहर अँधेरा फैल रहा है। वर्षा का जोर कम पड़ा है।

"रामजी कब आयेंगे ?"

"मन्दिर का काम और दूसरे सामाजिक कार्य करके वे आठ बजे ही पहुँचेंगे।"

"दीदी, हम नीचे जायेंगे। वहाँ पारुक्कुट्टि और बिटिया अकेले हैं।"

सीढ़ी उतरते वक्त सुप्रिया को जोर से नाम जपते सुना।

"नमः शिवाय।

नारायणाय नमः।

अच्युताय नमः।"

सुप्रिया पूजा के कमरे में पालथी मारे बैठी नाम जप रही थी। ललाट पर भस्म की रेखा। सामने पवित्र दीया। उसकी लम्बी छाया पीछे दीवार पर पड़ी थी। मानो वह बड़ा आकार भविष्य की झलक दे रहा हो। सामने एक पीठ पर श्रीकृष्ण की नीली मूर्ति पर माला पहनायी है। पीछे ढेर सारे देवी-देवताओं के चित्र। अगरबत्ती की खुशबू। माधवी सुप्रिया के पास बैठी।

एर्णाकुलम में यह वातावरण कभी नहीं मिलेगा। कांक्रीट कमरे एकदम भावहीन हैं। वहाँ आत्मीयता को कोई स्थान नहीं। इसलिए पूजा-भवन बनाने और बच्चों को सन्ध्या पर वहाँ बिठाकर नाम जपाने की कोशिश नहीं की। और लड़के, वे शाम के वक्त मिलें, तब न ?

माधवी कुछ देर आँखें मूँदे बैठी रही। स्फटिक की-सी आवाज जब तक कानों में नहीं बजती, तब तक वह आँखें मूँदे बैठी रही। वह बचपन के उन दिनों में, जब नानी जिन्दा थीं, खो गयी। वह और शारदा दीदी मिलकर नाम जपती थीं। दीवार पर परछाइयाँ नाचतीं। दीये का दीपनाल हिलने के अनुसार कपूर तेल और चन्दन की अगरबत्तियों की महक बाहर की भीगी कंकिटक सन्ध्या की बेचैनी दूर करती थी।

रात को खाने के बाद वे दहलीज पर बैठीं। सामने मेज पर लैम्प की रोशनी, उसके परे अँधेरे का जंगल। उसमें जुगुनुओं को जगमगाते देखा। अपने बचपन में जिन जुगुनुओं को देखा था, उनकी कौन-सी पीढ़ी होगी? उसने उन छोटे जन्तुओं को भी याद किया, जो जुगुनुओं को घोंसले के अँधेरे में ले जाते। उनकी भी पीढ़ियाँ बदली होंगी। बचपन में देखे किसी जुगनू को देखते पूछ सकती क्या वह जिज्ञासु लड़की याद है, जो तुझे किसी रात पकड़कर अपने हाथ में छिपाती और अँधेरे में फिर जाँच करती।

सोने के समय राम जी बोले, "मैं नीचे के कमरे में जाऊँगा।"

"नहीं", माधवी बोली। "आप पलँग पर सोयें, हम तीनों नीचे दरी बिछाकर सोयेंगी।"

"नहीं, नहीं। दीदी और छोटी बहन के कान लगाने से मैं सो नहीं पाऊँगा। मैं आराम से नीचे के कमरे में जाकर सोऊँगा।"

बारिश थम गयी थी। उसने चाहा कि बारिश तेज हो। मेंढकों का संगीत भी। पेड़ों की डालियों से तेज बहती हवा का शोर और बारिश का शोर सुनकर बारिश में मजा आयेगा। समुद्र का गर्जन अभी शुरू नहीं हुआ। बारिश के तेज होते ही वह इस तरफ सुनाई देता।

सुप्रिया सो गयी।

शारदा दीदी बतिया रही थीं, "राम जी कहते हैं कि तुम्हारे त्रिशूर के घर और जमीन को कम-से-कम पाँच लाख लगेगा।"

"शारदा दीदी, याद है, नानी ने हमें श्री पार्वती के चरण दिखाये थे।"

"उँ···उँ···और इधर जमीन और खेत को मिलाकर दो लाख नहीं मिलेगा।"

"याद है न, सफेद फूलों को उल्टे रखकर दिखाया था। ओणम् के लिए फूलों को सजाते वक्त भी बीच में ऐसा करती हैं।"

"तू क्या-क्या बोल रही है?" शारदा दीदी ने पूछा, "फिर तुझे कॉनवेण्ट में पढ़ाने को भी ज्यादा पैसा खर्च किया है। वो सब घर का धान बेचकर मिले पैसों से। मैं, जब दसवीं में हार गयी, मेरी पढ़ाई वहीं बन्द हुई। सोचा था कि शादी भी नहीं होगी। पर किसी प्रकार अठाईस की उम्र में वह तो हो गयी।"

"पढ़ाई बन्द हुई, यह तो दीदी की खुशकिस्मती थी। मैंने सिस्टरों की कड़ाई

के बीच डिग्री ली थी। उससे क्या हुआ? मैं गम्भीर बात करती तो आप लोगों को मजाक सूझता।"

"मैंने यह सब बताया तो रामजी ने कहा कि इन बातों में मैं दखल नहीं दूँगा। फिर मैं कहूँ किससे?"

माधवी को लगा कि दीदी का गला रुँध गया। उसने उनकी कमर पर हाथ रखा।

"दीदी बेवकूफ है। मुझे अब एक और घर की क्या जरूरत है? त्रिशूर का घर मेरा है। मेरे वे दो लड़के हैं न? ज्यादा घर चाहिए तो वे बनायें। यह घर, जमीन और जायदाद दीदी की ही है। सब सुप्रिया का है। सुप्रिया मेरी बेटी तो है।"

"बेटी की बात आयी, तो मैं कल उसे एर्णाकुलम ले जा रही हूँ। स्कूल खुलने के पहले रवि वापस ले आयेंगे। जानती हैं, यह उधर बच्चों को कितनी प्रिय है।"

"तो फिर उसे लिखकर रजिस्टर करने में क्या हर्ज है?"

माधवी ने सोचा। वही तो ठीक रहेगा। यह तो कहा नहीं जा सकता कि आने वाली पीढ़ी कैसी होगी। तब तो अभी से सब कुछ ठीक करना होगा। जब हम आपस को चाहतीं और जिन्दा हैं। पर ऐसा करें, तो अब पुराना-जैसा न रहेगा। मैं इधर इतनी आजादी से आ नहीं सकूँगी। दीदी का प्यार भी नष्ट होने का डर है। इस पुराने घर में जिन्दा रहे स्वर्गीय परदादा और नानी मुझ छोड़ दें, यह सन्देह भी। घर की प्राचीनता उसे प्रिय लगती थी।

"दीदी, रोओ मत।" माधवी ने दीदी को पास खींचते हुए कहा। "मैं कल जाते हुए घर जाकर माँ और बाबूजी से मिलूँगी। बाबूजी से कहूँगी कि यथासम्भव जल्दी सभी जायदाद दीदी के नाम लिख दी जाय।"

"तू कुछ कहना मत। पिताजी के निधन के बाद दूसरे पिताजी ही मेरी देख-भाल करते हैं। कृतघ्नता ही समझेंगे।"

"नहीं, यह नहीं कहूँगी कि दीदी ने कहा है। मैं अपनी मर्जी से कह रही हूँ। यह तो पहले ही ठीक किया जा सकता था पर सन्देह रहा कि ऐसा करता तो सब पुराने ढंग से न चलता। वैसे दीदी, यह नहीं समझ पाओगी।"

शारदा दीदी कुछ नहीं बोलीं। कुछ देर वे चुप लेटीं। फिर माधवी को मालूम हुआ कि दीदी सो गयीं। वह थोड़ी देर मृत लोगों को याद करने लगी। उन्हीं ने उसे सिखाया था कि प्यार क्या है। आज भी उसे लगता है कि उस घर के बरामदों से होकर उनकी करुण दृष्टि उस पर पड़ती है। खासकर नानी की।

चिड़ियों की बोल सुनकर माधवी जगी थी। लगा कि वह आवाज खिड़की के पास से आ रही है। आँगन के आम के पेड़ से होगी। उस आवाज में शिकायत

है, कुतूहलता है, बधाई है, प्यार है, नफरत है। इन सभी आवाजों को अलगाने की उसने बचपन से कोशिश की है। पर कभी सफल नहीं हुई। एक आवाज दूसरी आवाज का अनुबन्ध होकर, एक संगीत बनकर कानों में गूँजती हैं। बीच बीच में दूसरी कई चिड़ियों की आवाजें इस आवाज की गुणवत्ता बढ़ा देतीं। इस संगीत को सुनते हुए वह फिर नींद में पड़ गयी। फिर जग उठी तो, कौओं की आवाज सुनी। आखिर पहुँचने वाले वे ही हैं।

शारदा दीदी ने शायद सुप्रिया से एर्णाकुलम जाने की बात कही थी। सबेरे जब माधवी नीचे उतर आयी, तब तक वह नहा चुकी थी। उसने लाल फूलों वाला रेशमी कुर्ता पहना था।

"बेटी को मौसी ले जायगी। चाय के बाद।" नाश्ता करते हुए माधवी ने कहा।

"मैं कल एक बात बताना भूल गयी।"

"क्या बात है?" शारदा दीदी ने पूछा।

"यही कि मुझे सबेरे चावल-पानी और चटनी चाहिए।"

"ओ! सबेरे खाने की प्रिय चीजें।"

दीदी को याद है, हम सवेरे फर्श पर बैठे चावल-पानी पिया करती थीं कटहल के पत्तों के चमच बनातीं। तब यह मेज-वेज कुछ नहीं थी। दीदी को तब भी चावल-पानी पसन्द नहीं था। पहले माँड पीती और फिर चटनी के साथ भात खाती।

बीस नारियल छीलकर बाँध रखा है। दीवार के पास बड़ी-सी थैली दिखाकर शारदा दीदी ने कहा, "फिर दो अनन्नास, कुछ केले, कच्चे आम का अचार रवि और बच्चों को बहुत पसन्द है।"

सुबह मियाँ-बीवी मिलकर यही बन्दोबस्त कर रहे थे। मुझसे भार नहीं ढोया जायगा।

"त्रिशूर तक मैं इन्हें पहुँचा दूंगा।" रामजी बोले।

"एक बोतल गाय का घी भी है। उसे भी रखूँ?" दीदी ने पूछा।

माधवी हँसी। उसके आने पर हर बार यही होता है। जितनी भी चीजें रखें, फिर भी शारदा दीदी सन्तुष्ट नहीं होतीं। इसी प्रकार जब कभी वे एर्णाकुलम आते, तब भी कितनी चीजें ले आते। छोटी बहन का भी इन चीजों पर हक है। मैं अकेला खाती, तो ठीक नहीं रहेगा। यही उनका विचार है बेचारी स्त्री।

"गाय का घी···कुछ नहीं चाहिए। उधर रवि को वैसे प्रेशर है। ले जाओ तो सब खा लेंगे।"

चाय पीने के बाद माधवी ने सुप्रिया को सजाया। बाल दोनों ओर कर रिबन से बाँध दिया। चेहरे पर पाउडर लगाया। आँखों में काजल। एक छोटी-बिन्दी भी लगायी।

"मेरी बिटिया एक राजकुमारी हो गयी है।" रामजी ने कहा।

पाजेब पहनाने को सुप्रिया को स्टूल पर बिठाया। माधवी ने नीचे बैठकर उसे बाँध दिया। सुन्दर गोरे-चिकने पैर। सुन्दर उँगलियाँ।

"श्री पार्वती के चरण तूने देखे हैं?" माधवी ने पूछा।

"सफेद फूल हैं न?"

"नहीं, यही हैं।"

पाजेब लगे एक जोड़े पैरों को छूते हुए माधवी ने कहा, "यही श्री पार्वती के चरण हैं।"

उसने झुककर उन नन्हे पैरों को चूमा।

अनु० : वी० डी० कृष्णन नम्पियार

●